









वसुधैवित्री कृत्तिका दवमाञ्जु नृक्ष च ४ सर्वकामार्थपापयज्यविनियोगः ॥ वेङ्कटेश्वरसूत्र  
नीलोत्पला सुषुम्ना मधुचानिदी ॥ मना ह्लासूनसायन्या सायिकाललितागिवा ॥ कान्तिका काम  
नीकानी नरिनामामना रुवा ॥ कल्याणी सूरुगमदया नेगला हृदयंगमा ॥ भूरुद्रा नमणीद  
का साधी सच्चैर्मंगला ॥ वामारिकावती रुक्मा कमनीयानिका मला ॥ एभराहिनूयामधूना  
नरिनामा नतिप्रिया ॥ सूनामा सालिनी गीता चन्द्रका त्वासूणी मला ॥ मना नमनी महामाया मा

मंगिमादिनात्मिका ॥ महालक्ष्मी महागङ्गा कि महादवसु नूयिणी ॥ मरुन्धनी महानन्दा महा  
नन्दाविधा यिणी ॥ मालिनी माधवी माधी मरुन्धनी मदा कटा ॥ आनन्दकन्दविजया वैद्यनी चित्त  
नूयिणी ॥ सुप्रकाशमदीकाना विन्दुनाद सुनूयिणी ॥ कामणी कामका निष्ये कामदा कामवन्धुना ॥  
हृन्धुना चरुिका चरुि चामुण्डा मल्लिका ॥ अर्धपूष्पमहा नूया रुक्मणी रुवमन्धनी ॥ विचित्रि  
चित्रा चित्राङ्गी रुद्रगङ्गा कूलम्बनी ॥ चैतन्यनूयिणी निर्या निर्या निर्या सनागनी ॥ क्रीकानी कृष्णलीला



श्रीधविनी रुक्मसंरुवा ॥ उन्मादिनी महादूरी सुप्रसन्ना सुवार्द्धिना ॥ यत्रमानन्दिनी सन्दा यत्रमार्थ  
स्ववृष्टिणी ॥ या गन्धवीया गन्धूया हंसिनी यत्र हंसिनी ॥ कला कलावगी नका सुधूमा चर्मचा विनी  
॥ कनर्धनित्रया सुष्मा व्यामघ्ननिवासिनी ॥ काला सुमालिनी माया वयव्या चलदर्वरा ॥ विदुमारा  
विष्मलाक्षी विष्मला विष्मनामिका ॥ वीनर्वया विष्मर्वया विष्मविष्मविराविनी ॥ विष्मकीर्णविष्म  
निवा विष्मनामिका ॥ मदलिना मनारिना माननी मानवर्द्धनी ॥ मादीनी मादिनी माया मदावा

सामदाय्या ॥ मदिनी सन्दिनी माता मदिलाक्षी मदालिष्ठा ॥ मदात्मिका मदासाना मदवि  
दूकतादना ॥ मूलरुक्मा महामूला मूलाक्षनिवासिनी ॥ सिन्दूरनका नकाक्षी निनया  
त्रिगुह्यत्मिका ॥ वगिनी वासिनी वाक्षी वानूक्षी वानूक्षी प्रिया ॥ अत्रुक्षमत्रुक्षी वामारुमिनी  
वद्विवासिनी ॥ सिद्धा सिद्धगन्धरी सिद्धि सिद्धिदा सिद्धिमारुका ॥ सिद्धिचिन्ता सिद्धिविद्या सिद्धाया सिद्धि  
समता ॥ वाग्वीवी आदावंधा वाग्मयी वादिमन्त्रदा ॥ त्वनिगास्तत्वा त्वर्था त्वयिनी च त्वनात्मिका ॥



वा॥ सकलानिष्कलाकाली कनाली कालराघिणी॥ कोलिनी कमला काणी कमला कमला व  
नी॥ मन्त्रात्मिका मन्त्रमाता मन्त्रगम्या मन्त्रिणी॥ पूष्यवर्धुमखाविद्या पूष्यिनी पूष्यवर्द्धनी  
॥ वरुणेश्वरी मरुतावका पूनाक्षपूजवाशिनी॥ राखनारु नवी रासा रुद्रकाली कयालिनी॥ गी  
र्वक्षणीयनी लोनी निविष्ठा निविर्भंगता नसात्मिका नसासाना नसानन्दा नसावहा॥ कान्ति  
नी स्रुतिनी कास्या कामना कामनूयिणी॥ विविशविद्याविधिदा विश्वस्याविविधानिवा॥ सर्वा



मसुन्दरी सर्वत्रावध निवर्द्धयिषी॥ चतुर्नांगी चतुर्वेदा चतुर्वाचा चतुर्हासिनी॥ महा मायाम  
नुमयी महिषून्समाश्रिता॥ गानास्तु गाननूदी गानीली गाननूयिषी॥ ॐ कृचायं महायागं  
छुरुद्राप्रियदायिषी॥ सर्वदा सर्वजननी सर्वदा सर्ववर्जनी॥ सर्वसिद्धिमहायाया सर्वथागप्रसा  
धिषी॥ माहानूरावामाहृत्ती सर्वणी सर्वधावनी॥ आत्मविद्यामहाविद्या ब्रह्मविद्या यगन्धि  
नी॥ विष्णुधनी निवानाध्या निवानन्दानिवात्मिका॥ अनाहना कुनिलया॥ नेरुलानिदानीसही

निर्वोक्षनूयिषी निर्ह निक्कलानिक्कलपदा॥ श्रीरुलानिवदानिष्ठा श्रीमयी निवन्नुयिषी॥  
यन्नाकून्नुविषी कूडा कूटिला कूटिलालका॥ महादनामही नूया महिनामहिनामही॥ निर्व  
कनी सर्वनूया विद्यामहाविचित्स्वना॥ सूर्यमलुलमध्वक्का किलाणीकववल्लरा॥ सूनरिस  
मनासूर्य सुयूनासामरुषणा॥ सुधास्रवा सुधानूया सुखासंविनि नूयिषी॥ अमूखासत्यसंक  
ल्या सत्यावदर्थरादिनी॥ ॐ कृगकिहानगकि ४क्रियागकि ४धियंकवि॥ निलयानीलयान



न्या सुष्म क्लान्तसूयिणी ॥ सनलासुनलासावा सागनस्योसनध्वनी ॥ यनायनासनायनाय  
नानिष्ठापनायिणी ॥ व्याधिनीनादिनीगावा साकिनी मारुसाकिनी ॥ धीकनीधी मनी माया  
निवयानिसूरुक्ष्मा ॥ निवानन्दानिना कया निर्दुम्भनिर्मुक्षमिका ॥ चरुनी चरुिणी वाक्की ॥  
क्वाणीवक्त्रदायणी ॥ धृतिस्मृतिर्मनिर्मधा सुधाः नृषिष्मृतिस्मृषी सुवानन्दसुर्ववाधा सर्वसोः  
राग्यवर्द्धनी ॥ निवस्ययानिनाकाना ऊरिनी ऊरिनी ननि ॥ रागदाकमलानी ॥ ज्ञाविणी क

रिणी सुति ॥ कूङ्गी कूलमार्गस्का मधना जीर्णनिधिया कूलानी ॥ कूलानन्दि वाधावा  
ग्नादिनीसमी ॥ उमाप्रियावृतालक्ष्मी नकना कूलदीपिणी ॥ विष्मस्तिकाविष्मथानि विष्मव  
रिस्वयूयिणी ॥ गन्ताविनायकी ॥ वीर्याङ्कनी गवर्गकनी ॥ सुन्दरीगी सुनाका ग्ना सुनर्वया  
सुनंघनी ॥ सुवर्धुवर्धुसकीरि नायवर्धुस्वयूयिणी ॥ ललिताङ्गी गवस ४ धी ॥ सन्दासन्दस  
यूयिणी ॥ गम्भीरनी नन्दिनी नन्दा दाहि स्यन्दसूयिणी ॥ निर्विषास्येनास इर्मा मरिषासूनमन्द



ही॥ विष्णुखा विष्णुपा विविधार्थविधा श्यही॥ विजया विजयजनही विजयनिष्ठा विलासिनी  
॥ रुमध्वनिलयानिष्ठा निर्गुणी गुणवर्द्धनी॥ हृदये खारुदनगुहानि रुदानी रुदनाजिनी॥  
विरुतिरुतिनारुती सूर्यतिरुतिकानिधी॥ वृंभनी साध्वती लोव सर्वही सर्वदायही॥ रुवा  
नी रावनी रावा रासगी रुग राविनी॥ हृदयमनिलया पद्मं स्वनात्यर्हस्वनात्मिका॥ अविः  
दूतूपा विद्युक्ता विन्दुविन्दुस्वनूयिणी॥ प्रह्ला प्रह्लावनी पूष्पा साविस्का नी समाहिता॥ सूक्ष्म

नूपा यवानन्दा स्वासस्का विन्मयी चिना॥ पूष्पुनन्दा दया पूष्पु मदधूर्तिगलाचना॥ गन  
ध्वाननूणी कान्ता नयनकामनास्विनी॥ अनन्तमन्तमहिमा निरुकावनिलंजना॥ अवि  
न्यनकर्विण्यार्थ विन्याचिन्यस्वनूयिणी॥ जगन्मयी जगत्मा न जगत्मा न जगद्गवा॥ आः  
स्थानीयनिवानन्दा कटस्का शक्तनूयिणी॥ क्लानगम्या क्लानमूर्ति क्लाननी क्लाननूयिणी॥  
खचनी खचनी मूढा खचनी योगनूयिणी॥ अनाथनाथानिर्मुक्ता अधानाधाननूयि



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ सुखविन्दुसमायुक्ता ॥ काकिनीकमलावासायार्चनीयाननूयिणी ॥  
 मधवधुंधानभूषी गयिणी दीपनिदिना ॥ मकला मकला काला सुधानूया सुखमयी ॥ द  
 दया दया काला दुरुनाकाशमधुग ॥ संगलामंगला काली महामंगलदवना ॥ मा म  
 ल्यायिनी मान्या धूधुमंगलनूयिणी ॥ स्वप्रकाशमहारासा रासनी नाननूयिणी ॥ काया  
 यनी कलावासा धूधुका मायसस्त्रिनी ॥ नादवासाननिलया नानायलमनारुना ॥ मा क्रमा

अर्धविधानं कृत्वा विप्रिञ्चा ७ यदिरुमिका ॥ अन्तर्लनादनानाध्या २४ यायादनिर्गकमान  
 अद्विदाकामदासिद्धि कृतानदामानदायिनी ॥ सुधास्वाहासूनामदासूर्यधामदमहिला ॥ निर्वा  
 ददायिणी ॥ एष्टा समिष्टासर्मदाष्टिना ॥ सुवर्चनासूनानाध्या सुहृत्सत्तासूनाध्या ॥ सुनिसुनि  
 मयिसुखा सुनिनूया सुनिप्रिया ॥ कामनूया कामकरी कालद्वीकालनूयिणी ॥ उका नगरुणी  
 काली कंकाली कालनूयिणी ॥ विष्णुपत्नी विबूधार्थ विधिग्वविग्ववन्दिता ॥ विग्ववद्यावियदी



ना विष्णु स्त्री विष्णु नृपिणी ॥ गी ललत्क ४ गी नवमी गी नस्का गी न नृपिणी ॥ उती ग्ग ख न्ग ख न्ग  
गी अकिनी अकिनी प्रीया ॥ विधनी वध गुरुिका र्थ जली निज नृपिणी ॥ जाल धली जगत्स  
नी जलनी जलली जली ॥ साकिनी सा न सा संध्या समूर्ति सदा निवा ॥ सुनक्ति सु नगा काना  
सु ननी सु न नृपिणी ॥ निव दूनी निव ४ निष्ठा निव दू निव नृपिणी ॥ नाकिनी नम ली नामा न  
ऊ ही न ऊ ही कनी ॥ विष्णु रूनी वना वस विधनी विधिवत्सला ॥ विद्या रूनी विविदाथ विष्णु

या विष्णु रू निरा ॥ विष्णु सि का नि का वम्या विष्णु रू नि वि च दक्ष ॥ विष्णु यानि मरु यानी  
कर्म यानि प्रिय वदा ॥ हाकिनी रु नि ली हास्या ना हि ली ना ग हा नि नि ॥ प्री सा ना प्री प्रदा  
प्री ४ प्री ४ प्री क ना प्री वना प्रीया ॥ प्री कनी प्री मनी प्रीया प्री यनी या वि वं धनी ॥ काम प्री  
या काम दूनी काम गी शाल या प्रीया ॥ नूदा सि का नूद मा ना नूद ऊ ल्मा न ऊ स ना ॥ वै काल  
वा उ ग्ग नस्का रु न वी ला दि नी यना ॥ क न द हा रु ग ना थ सू धा वि नू स मा पू ना ॥ का कि



नी कमलावासा पार्वतीया नवविधी। भयवर्धुघानमुखी गयनिगायनीदिना॥ सकना  
कामचक्रंगी महासनविमाहिनी। उंलुका नागुरु (अष्ट) कालीचक्रनायिनी॥ वष  
काली नूतचक्रुं कालीसागरासना। गनूठी गनूठी अष्टा स्वागतावधूचाविधी॥ कृष्ण  
गवाहिनी कृष्ण कोवली कमलाधिया॥ चतुर्धनी चतुर्नूपा प्रचक्रुं चंद्रमा रुकाशा॥ क  
कालपत्नी कालिन्दी कोमानी कामवल्लरा॥ यानन नूपा यानरुका री मनूपा रुयापदा॥ नक

- चक्रुं सना नन्दा त्रिकाशघाननार्थिना॥ महा कृष्णा कृष्णानी कालकूलनार्थिना॥ सर्व  
वर्धुसुवर्धुशिष्यनाममहाधुवा॥ यानधुवानागवर्द्धि वी नमाता नवात्मिका॥ दाद  
भातासना उक्ता निर्वर्धसुखदायिनी॥ आदिसत्वरुवासत्वा एकीकृष्णसमाहिनी॥ यना  
घानाकनाला की स्वमाता मन्नायिकी॥ आकाशलिङ्गसंरुता र्यचामुननसात्मिका॥ साध  
तानूतसिद्धार्थकायालिकूलनार्थिना॥ विद्यातनुमिश्र तं तु श्रुमधुसुगर्धिना॥ वागीः



श्वनीया निमृडा विखटु सिद्धवतिता गृगमयी ० निलया कोलमा रंगकन्यका ॥  
समर्तु मधुलगन स्वनाथानवाहिनी ॥ यादका क्रमसंनता रुचवस्का यनाजि  
ता ॥ अतधूगारुचानन्दा दिव्यादाननसा सदा ॥ निजमनाम्ना सवनी विष्णुवधूद  
तर्पिता ॥ उन्मरुहलाचनिका श्यामिनी गनगर्पिता ॥ सक्ताननदिगावीजा चक्र  
मलापका विधी ॥ स्वद्वक्रनायिका रासा यनाविशामिमाहिनी ॥ १०० ॥ अर्क रुची

अर्क रुची स्कन्दनन्दनदुर्गर्पिता ॥ कर्मकरी समासासी संगीता विन्दुमालिनी ॥  
अर्क रुची अर्क रुची स्कन्दनदिन्दुर्गर्पिता ॥ चञ्चिका चञ्चतयदा चानुखदागध निः  
सी ॥ अद्यानामकुनयदा राविनी रावतूयिनी ॥ उषासंकर्यनी धूम्रा धूसनी नागिनी नि  
वा ॥ सुनराइल्लरागा निमरुगसि सिखटिनी ॥ यागलक्ष्मी नाजलक्ष्मी रागलक्ष्मी क  
पालिनी ॥ दवयानिर्गमनी ललिताना धनध्वनी ॥ कृशालिका नाजलक्ष्मी वल्लिककुवः









आर्य समाज  
1949 I

लार

मांलिनी॥ सदानत्यास पराद्राव और्ध्वनक वर्षिणी॥ मथनमथना दूर्वाभसिका सर्व  
रुक्मिणी॥ अग्निजिह्वा ह्याधीश्वरिणी दुष्प्रसासदा॥ सूर्यदिका कालदूरी देवकार्य  
सत्रूपिणी॥ कुंहीनी सखिनी गुवावानी ही दुर्लभा लोका उग्रालिका यमवती धूर्जती च  
कथानिनी देवी तत्सुवर्षा सुलभ भवती त्रयधा विनी॥ अरुनी रुक्मिणी रुक्मिणी वलीया  
कलीवली॥ वक्रिनी वामदेवी खाडिनी खेडिनी दीदी॥ किं काली वत्सना दृष्टा संकाली



मनहंसिनी॥ अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी  
धी ० निवासिनी॥ अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी अङ्गिणी  
हीमरुगिनी॥ सद्यस्वितिनी रुद्रियागिनी नादिनी नटी॥ वंद्यानिधी कालवाही मधमाया  
सात्मिका॥ विरुवक्का गंदर्या मरुणी धूमलाचना॥ मार्गगीयी ० निलयादगिनी वाधिः  
नी नूचि॥ मगधिस्याहिनी सिन्धुवधनी वधमा कली॥ सावित्री संगिनी कर्हि क्रमा नूयाम

दादया॥ गुह्यग्वनी गुह्यकावा सगुह्यगुह्ययूजनी॥ गीर्मा रुगिनिजा सार्द्ध सर्वाणी  
सर्वमंगला॥ अका किनी सिद्धिकन्या कलासनसूयिणी॥ अधिष्ठात्रूयिणी वक्रायागि  
नीयी ० नूयिणी॥ दकावाकायली दका मयनामयना तुला॥ रुद्रा रुद्रनी धनवी धानिणी  
वसुवनिणी॥ वसुधा वसुधाकाया वसुधना वसुधिया॥ नर्मदा सर्मदा गुह्या सार्पिणी शी  
कनात्मिका॥ मयिनी नायिनी दीका साधनी समवारिनी॥ स्वस्ति ४ स्वस्ति ४ मतिवाला कविला



विष्णुलिङ्गिनी॥ अर्द्धिष्मती तिथिर्मती कविणी रुच्यवाहिनी॥ अनानिना विष्णुविद्या मा  
नसीरुविवाहिनी॥ विद्याधनी लाकधाश्री निवमाना स्वतृपिणी॥ यनाक्षी सर्वगारुडा विष्ठा  
मकिष्णयात्मिका॥ शिवाक्षनी लयाशुक्ली रुच्यमाता रुच्योत्तम॥ रुच्यविद्या रुच्यसागरुच्यी  
तृयाक्षिपूष्कला॥ शिवागर्गविष्णुनाशुम्बा शिवाक्षिविधगमिनी॥ शिवाक्षनका विविधा शिख  
नाक्षिपूनात्मिका॥ शिवधुर्गिष्यदाश्री नु शिमूर्तिविष्णुधन्वनी॥ शिदिवाक्षिदिवगमनि शिक्का

पूननिवाहिनी॥ शिवाक्षी शिदग्मशुद्ध शिद्धि विष्णुमालिनी॥ शिवगर्गविष्णुनाशुम्बा  
शिवाक्षविधिगमिनी॥ शिवकविद्या शिरग्मर्माक्षी शिवमालिनी॥ शिष्णुनाक्षी शिजननी  
रुचवीकुडिसून्दरी॥ ॐ तिष्णीकुडिकादद्यामस्तु नामसहस्रकं॥ कथितं तव दद्वणी नरु  
स्यं सर्वकामदं॥ सर्वपापघ्नगमनं सर्वतीर्थरुल्लस्यदं॥ सर्वसम्बलनंदनी सर्वपापविधना  
गनी॥ सर्वनागरुर्गधूष्यं सर्वपापविनाशनी॥ एतन्नयस्तु तव ददी पूजयित्वा सुमध्यामा॥ शि



धनिसकलान्कामानसंपदाकामनूयिणी॥ आयुश्चवर्द्धनं तस्य विद्यालक्ष्मीसुपूष्क  
वानाश्रयरागयेऽस्तुतिविद्वान् दिव्यामिमाम्निर्कांजय॥ ॐ मिथीभक्तु आगमकेला  
गखेष्टु श्रीउमामहेश्वरसंवेद नकादगायठले श्रीकृडिकानाम सरुसुर्वसमार्थ  
॥ ॥ गनूदानविनिरास्यासिंहयक्षा कनिष्ठां कुचरुनदामिर्तांगी सर्वरुषारिनामी। अरुय  
वनदहसामकवकुं विनर्ता मयमदिनमखाजां कृडिकां चिन्तयामि॥ ॥ ॥

ॐ नमः श्रीरत्नवायनमः॥ ॥ अस्य श्रीवदकरेन वनामा कृष्णकस्यायद्वानसाय  
वरुदानव्यकसाविनिनसि॥ अनूद्य कंदामखे॥ आयद्वानरेन वादवनाददि॥ अ  
ष्टवाकं विनयनमिति वीर्ज॥ वंगकिं कोकीलकंच उचिधपूवार्थसिद्धयसमानाधन विनि  
याग॥ रत्नवर्ममूर्द्धिविन्यसललाटरीमदगर्नी॥ अश्वास्तुगाद्ययन्यस्य कर्तुयास्तुनायः  
कं॥ कर्तुर्मकनयार्म॥ कर्तुयालेदुर्दिन्यस्य॥ कर्तुयना रिदलठकयां सचिघना



ननी॥ नका कृमूर्वा विन्यस्य अंघ्र्या ८ नकयानके॥ यादयार्दवदवर्ण सर्वाणि वदू  
कं न्यसंग॥ **क्रो** **क्रो** वां अंगुष्ठा र्यां नमः॥ **क्रो** वां गङ्गा नी र्यां नमः॥ **क्रो** वां मध्या मा र्यां नमः॥  
**क्रो** वां अनामिका र्यां नमः॥ **क्रो** वां कनिष्ठिका र्यां नमः॥ **क्रो** वां कनकनयन र्यां न  
मः॥ **क्रो** वां हृदयाय नमः॥ **क्रो** वां निनस साहा॥ **क्रो** वां निखाय वषट्॥ **क्रो** वां कवचाय  
हूँ॥ **क्रो** वां नखयाय वषट्॥ **क्रो** वां अक्षय रुट्॥ **क्रो** अंगुष्ठा र्यां नमः॥ वदू काय

गङ्गा नी र्यां नमः॥ आयद्वान्वय मध्या मा र्यां नमः॥ कनकन अनामिका र्यां नमः॥  
वदू काय कनिष्ठा र्यां नमः॥ **क्रो** कनकनयन र्यां नमः॥ **क्रो** हृदयाय नमः॥ वदू  
काय निनस साहा॥ आयद्वान्वय निखाय वषट्॥ कनकन कवचाय हूँ॥ वदू  
काय नखयाय वषट्॥ **क्रो** अक्षय रुट्॥ कनकनितकया ल८ कू उली दं उया निस्तनू  
निमिजनीलयालय हूँ यवीरी॥ कुरु समये सद्यथा विघ्न विलं दहं कुरु कुरु यति वदू कनाथ८



सिद्धिदः साधकानां ॥ ॥ गिवायनमः ॥ ॥ मन्त्रपुष्टसखासीनं दददत्तं शर्मवर्कं । शंकरं  
 धनियपुष्टपात्रं नीयनमः ॥ ॥ पार्वत्यवाच ॥ रुग्णवत्सर्वधर्मरू सवर्णभक्तगमादि  
 षू आयदद्वायनीमरु सर्वसिद्धिप्रदं नृणां ॥ सर्वेषां च वरुणा नां हितार्थं वाञ्छितं मः  
 यो ॥ विष्णुवत्सुनाह्वये ॥ निष्कृष्टसाधनं ॥ अंगुन्या सकन्या स दहं न्या स समन्वि  
 तं । वक्रुमर्हसिद्वंशं मम हर्षविवर्धनं ॥ ॥ श्री ॥ ॥ नमः ॥ ॥ गृध्रदविमलमनुमा  
 यदद्वायनीमरु रुक्मं । सर्वेश्वरवृणमनं सर्वभूविनाशनं ॥ अयस्मानादिनां मम हर्षं कनोऽ  
 दीनां विष्णुवत्सुनाह्वये ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ मन्त्रपुष्टसखासीनं दददत्तं शर्मवर्कं । शंकरं

नसुखवर्द्धनं। सदावश्यामित्तमनुं सर्वसाधनमिमं प्रियं॥ सर्वकामार्थदं मनुं नाश्रुताग  
यदनुष्ठां। आयुश्चाननं मनुं सर्वं। किं समन्वितां॥ पुनर्वपुर्वमूह्य दवीपवम  
यनं। वदकायतिवेयथा। दायश्चाननं यच॥ कुरुद्वयं तत्त० यथा। वदकायपूज० क्रिय  
त। दवीपवमूह्य मनुं। दानमिमं प्रियं॥ मया दानमिमं दवि। तेलार्थं। वापि दुर्लभं। अ  
थेकाग्रमिमं मनुं सर्वं। किं समन्वितां॥ यदिदं मनुं नार्जय। तिस्रं धैर्य० य० न्ननावक  
धुं वापि। गधुं वा। सुनायी पृथगीयति॥ समनस्य०। नादापि। तद्वत्। ददनस्यति॥ समन  
दवमनुस्य। रूपायति। पिण्डचका०॥ विद्वद्वस्यति। रितावै। कालद्रुमिमायका०। य०। दाया



यव। सर्वकामार्थदं वि साधकानिष्ठ रावर्ह ॥ नामाष्टगणकस्यास्य कन्दानुष्टयकी  
 रिर्ग। कुरुयावध्यकानाम् पूर्वदिवाथरुनवे ॥ अष्टवाद्रुतिनयनं ॥ तिवाजे समा  
 दिर्ग ॥ गकि क ४ किल कं ॥ मिष्ट सिद्धि ॥ नि यूय ॥ रुनर्वमृष्टिविन्यस्य ललाटरीमद  
 र्गनी ॥ नरुथा रुगहननं सावमयानुर्ग ॥ कर्षुया रुगनार्थच धगवा र्दक घालया  
 ४ ॥ नासाघूटदया ॥ एव रुस्मां गी सर्वरुषर्ष ॥ अनादि रुगमास्य च ॥ गकि रुर्ग गलन्यसंग  
 र्कधया र्दस्य समनं वाक्ता वहुलगजसं ॥ पा ॥ ४ कया लि नं न्यस्य रुदयमूठमालिनी ॥ गाने  
 वरुल लन्यस्य रुनया ४ कामवा निनी ॥ उदवचसदा रुर्ह ॥ कर्षुगीया र्दया रुध्या र्दया ॥



पालेयुद्धदण्डकुरुदं नालिदं क॥ पायो घनागर्भकदा वटुर्कलिगदगका। उदय  
काकनं नयस्य गत्वा वनिकलाचनं॥ जानआर्घ्यनानावै जै घयानकयायिना। एत  
४यादूकासिद्ध्यादयुद्धसूत्रं॥ आयादमसुर्कचैव आयदुद्धानकं तथा। दययस्त  
नाथाय आदिनाथाय मूर्धनि॥ आनन्दयदयुवाय नाथायाथ गिरासूत्रासिद्धभावना  
थाय कवचविन्यस्तथा॥ सहजानन्दनार्थं च न्यस्तं रुद्रयमथा॥ नि४सीमानन्दनार्थं  
य अक्षुचवयया जयता॥ एवं न्यासविधि कृत्वा यथा वरुदनीगर्भं॥ आनीगसूत्रवया नि  
यथा आत्माप॥ नन४० शुद्धसूटिकसंकाशं सहसादित्यवचनं॥ अग्निवर्धुसमाधयेता

वमयसमन्तिगं॥ नीलजीमूतगं काशी नीलांजनसमप्ररं॥ अष्टवाद्गिनिनयनं चतु  
र्वाद्गिवाद्गं॥ दंष्ट्राकवा लवदन्तं नूपूनावावर्षकली॥ रुजंगमखनान्दवमन्निव  
धुगिना नूदं॥ दिगं वनं क्रमानं वदूकाख्यमहावली॥ षष्ठांगमसिधायी च गूलैदक्षिण  
वाद्गुत४॥ उमनूचकया लं च वनदं रुजंगं तथा॥ वनदं चकया लं च गिगूलै नरुयंग  
था॥ आत्मा जयत्सुसंरुष्ट४ सर्वाकामानवाप्नुया॥ कनकलितकयाली कूठलीदह  
यादि॥ सन्नुहानिमिवनीला व्यालयरूपाय वीति॥ कुरुसमयस्यया विष्णुविष्णुदह  
जयति वटुकनाथ४ सिद्धिदसाधकानी॥ तुं कीरुववा रुगनाथश्च रुगा लारुगनाथ



[illegible]

चरित्नामकः॥ विनयननथाठिंरु॥ भंग॥ नीलजनप्रिय॥ वटकावटुवगस्थरु  
 द्वांगवप्रधानकः॥ रुगाधख्य॥ यद्युपतिरिद्रुक॥ यविद्यानकः॥ धूर्त्तदिगवव॥  
 गूनाद्विष॥ यंकुलाचन॥ प्रभक्त॥ भक्तिद॥ मुद्र॥ र्गकन॥ प्रियवान्धव॥  
 अष्टमूर्तिर्निधीगन्ध॥ गल्लनचद्रुगयामय॥ अष्टाधन॥ यजधान॥ सत्ययुक्त॥ मि  
 खीसख॥ रुधनारुधनाधी॥ रुधनिर्हधनालज॥ र्ककानधानीमूधीच॥ नागय  
 क्षायवीतक॥ ऊरु॥ धमाहनसूरी॥ मानव॥ करुणस्थ॥ रुद्रातीलजिनप्रस्थाद  
 र्कमधुविहविग॥ वलिरुक्वलिरुगूना॥ वालावालपनाक्रम॥ सर्वयज्ञान



इहोर्ग इहोर्गगनिमविगठ। कामी कलानिधिः कांगः कामिनीवग कृद्वी॥ सर्वसिद्धि  
यदा वेद्यः प्रहृविष्णुनिमीवरु। अष्टान्ननग रंगान्नी रजवस्य महात्मनः॥ नयाग  
कथिर्नंदवि नरुस्य सर्वकामदी। यद्दंयः नस्तार्ग, नामाष्टगममूरुमी॥ नगस्य इह  
विर्गकिंविद्वागमनीनरुयंगथा। नचरुगरुयनस्य नमावीरुयमवव॥ नगपुण्या  
रुयंकिंविद्यापूया नानवः कविगु। यातुका नीरुयंनैव यः यः (०) स्ता ५ मूरुमी॥ मा  
नीरुयनाऊरुयं गथावा नाग्निऊरुयं। उर्यागिकमहाधाव गथा ३४ स्वप्नऊरु

यं॥ वभनचमथाघानं य॥ १॥ शुभनरुमी। सर्वप्रसममायाति। सुखं नवकी  
रुनागु॥ एकादशसहस्रं दुःखं नवमयगं। यस्मिन्सन्ध्याय॥ १॥ द्विः संवत्सवम  
नंदिनं॥ ससिद्धिप्राप्त्यादिष्टां दुर्लभा मायिरानव॥ १॥ वध्मासाहू मिकामस्तु जयि  
त्वाप्राप्त्या नमः॥ नाजगन्नुविनामर्थं जयत्मासाष्टकं निगि। नाशीवात्रयचैवना  
गथसर्वं भववागु॥ जयन्मासगुयंमरुत्वा नाजानं वगमानयगु। धनार्थी वसूगाथी



